

शहादत.....



शब्द छोटे हैं पर अश्रु बहाते हैं,,
बात है " जश्ने - आज़ादी" की,
सिंदूरी रंग था लहू का ,
लेकिन कहानी थी वो सिंदूर के शहादत की ।
हुए बलिदान वो वीर थे महान,
सुखदेव, राजगुरु थे कुछ नाम,
किताबों की कोख में ये खेले,
लेकिन कहानी थी वो कोख के शहादत की ॥

घर छूटा,शहर छूटा,सरहद टूटी ,
खौफ़जदा नन्ही आंखें थीं,
बन्दूक बनी हाथ का खिलौना,
लेकिन कहानी थी वो बचपन के शहादत की ।

जोश -ए - आज़ादी का आलम कुछ यूं था,,
अंग्रेज़ की छाती पर
लिखी कहानी थी शहादत की ।

कौमी एकता का बुलन्द वो नारा,
न कोई हिन्दू न मुसमान,
राम के घर ईद थी,
किसी रहीम के घर दिया जला,
आज़ादी की चिता में हर व्यक्ति जला
क्योंकि कहानी थी वो धर्म के शहादत की ।

वो जुनून,वो जज्बा खो गये कहीं,
आज़ाद होकर भी बंध गए कहीं,
कुछ प्रश्नों में उलझे रह गये,
जिन्ना सही थे या गांधी,
ये पूछते रह गये,
क्यों ?
क्योंकि ये कहानी है हमारे विचारों के शहादत की ।

लेखिका -शिखा अग्रवाल,

1- एफ -6, ओल्ड हाउसिंग बोर्ड, शास्त्री नगर, भीलवाड़ा, राजस्थान ।